माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 13 जुलाई 2015 को राजकीय माडल उच्च विद्यालय, धनास–1, चण्डीगढ के उद्घाटन अवसर पर दिया गया भाषण।

चण्डीगढ सुदर शहर की लोकप्रिय सांसद श्रीमती किरण खेर जी, Principal Secretary to Governor, Punjab श्री एम.पी. सिह जी, Secretary Education, Chandiarh जिनका स्वागत भाषण आप सब ने अभी सुना, श्री सर्वजीत सिंह जी, यहां के डी.पी.आई श्री कमलेश कुमार जी और जिस विद्यालय का आज लोर्कापण हो रहा है उसकी प्राचार्या महोदया श्रीमती हरमीत कौर जी, अन्य सभी प्रशासनिक अधिकारीगण जो इस अवसर पर उपस्थित हैं, आमंत्रित अतिथिगण, इस धनास कालोनी, जिसमें 8448 फलैट हैं, इस क्षेत्र के उपस्थित नागरिक बंधुगण, प्यारे बच्चो तथा विद्यालय का स्टाफ एवं पत्रकार बंधुओ!

अभी बहुत सुंदर स्वागत गीत बच्चों ने गाया। एक बहुत अच्छा संदेश दिया कि विद्यादान से बडा दान नहीं है और विद्या से बड़ी कोई संपत्ति भी नहीं है। इसे कोई लूट भी नहीं सकता। ऐसे दान के लिए, बच्चों को शिक्षित करने के लिए, यह Government Model High School जो आप सबको आज सर्मपित हो रहा है, उसके उपलक्ष में, मैं आप सबको बधाई देता हूं।

बिना बच्चों के परिवार पूरा नहीं होता। जिस परिवार में बच्चे नहीं हैं, उस परिवार में लालसा रहती है कि बच्चे के बिना परिवार पूरा नहीं है। उसी तरह से कोई कालोनी, कोई बस्ती, उसमें चाहे सब कुछ हो, लेकिन बिना विद्यालय के पूरी नहीं होती। वहां विद्यालय भी चाहिए। और जिस तरह बिना बच्चों के परिवार पूरा नहीं होता, बिना विद्यालय के बस्ती पूरी नहीं होती, उसी तरह बिना पढे–लिखे बच्चों के, बिना पढे–लिखे नागरिकों के राष्ट्र भी पूरा नहीं होता। इसलिए राष्ट्र की पक्की नींव अगर आपको डालनी है, राष्ट्र को अगर शिखर पर लेकर जाना है तो हम समझ सकते हैं कि देश में रहने वाले बच्चे, रहने वाले नागरिक, उस समय की आवश्यकताओं से जूझने की पूरी शक्ति रखने वाले, संस्कारी और शिक्षित होने चाहिएं। और यह काम विद्यालय का होता है।

महाराष्ट्र के अंदर एक संत हुए। नामपुर के पास उनका आश्रम था। आज वे हम सबके बीच में नहीं हैं। वे ऐसे संत थे जिनके पास लोग मार्गदर्शन लेने के लिए आते थे। हम सब की तरह पढे–लिखे लोग, शहर के लोग भी आते थे। सप्ताह में एक दिन वे मौनव्रत रखते थे। मौनव्रत के अंदर हम जानते हैं कि बोला नहीं जाता, मौन रखा जाता है। लेकिन मौनव्रत के दिन भी लोग उनके पास आते थे और उस दिन बोलकर नहीं, स्लेट पर लिखकर वे उनका मार्गदर्शन करते थे। जब उनका मौनव्रत था तो पढे–लिखे लोग उनके पास गए, बड़ी तादाद में गए, झुंड में गए। जब पढे–लिखे लोग उनके पास गए तो उनसे पहले गांव के लोग उनके पास बैठे थे। पढे–लिखे लोगों को देखकर संत ने स्लेट पर लिखकर उनको कहा कि आप सब लोग जहां पर बैठे हुए हैं, वहां पर गत्ते के टुकड़े पड़े हुए हैं। इस गत्ते के उपर भारत है, भारत का मैप है, भारत का मानचित्र है। उन्होंने स्लेट पर लिखकर पढे–लिखे लोगों को कहा

कि इन टुकडों को जोड़ो और ऐसा जोड़ो कि भारत बन जाए। कई बार आप भी, बच्चे खेल में करते हो ना, टुकड़े जोड़ने की कोशिश करते हो। पढे–लिखे लोगों ने टुकड़े जोड़ना शुरू किया। लेकिन आश्चर्य की बात कि वे सफल नहीं हो पाए। कहीं न कहीं कोई कमी रह जाती थी।

जब पढे–लिखे लोग परेशान हो गए तब संत ने स्लेट पर लिखकर गांव वालों को कहा आप प्रयास करो। टुकड़े जोड़ो, भारत बनाओ। गांव के लोगों ने देखते–देखते टुकड़े जोड़ने शुरू किए और क्षणभर में भारत बना दिया। पढे–लिखे लोगों को थोड़ी शर्म आई। संत तो कुछ बोल नहीं सकते थे, बोलने वाले तो पढे–लिखे और गांव के ही लोग थे। पढे–लिखे लोगों ने जिज्ञासावश गांव के लोगों से पूछा कि आपने गत्ते के टुकड़े कैसे जोड़े? कैसे भारत बन गया? हम तो नहीं बना पाए? जब गांव वालों ने उत्तर दिया तो उन लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ। आप लोगों को भी आश्चर्य हुआ होगा? गांव वालों ने उत्तर दिया कि हमने भारत बनाया ही नहीं है। तो शहर वालों ने पूछा आपने भारत नहीं बनाया और भारत बन गया और हम भारत बनाते रहे, हम भारत बना नहीं पाए, बात क्या है?

अब जरा गौर करो कि गांव वालों ने उत्तर क्या दिया? गत्ते के एक टुकड़े पर भारत का चित्र था और आप लोगों ने गौर नहीं किया कि गत्ते के दूसरी तरफ आदमी का चित्र था, मानव का चित्र था। गांव वालों ने उनको हाथ जोड़कर कहा–श्रीमान जी हमने भारत नहीं बनाया। इस गत्ते के पीछे जो आदमी था, उस आदमी को बनाया। संत ने बिना बोले कितना बड़ा संदेश दे दिया हम सबको। संत ने कहा अगर आप भारत बनाओगे, भारत बनाने की कितनी योजनाएं हैं, आप भारत बनाना चाहोगे, भारत नहीं बनेगा। अगर आप सही अर्थों में भारत बनाना चाहते हो तो भारत में रहने वाले आदमी को बनाओ, इंसान को बनाओ। अगर आप आदमी बनाते हैं तो भारत अपने आप बन जाएगा।

भारत का बनाना, भारत का विकास, यह तो एक प्रोडक्ट है। लेकिन इस प्रोडक्ट को प्राप्त करने के लिए जो पहली आवश्यकता है वह यह है कि इसमें रहने वाला जो इंसान है, पहले वह बनना चाहिए। यह भारत कहां बनता है? इंसान से बनता है। इंसान कहां बना है? इसलिए जब शासन आता है तो शासन सबसे पहले विचार करता है कि हमारा सबसे पहला कर्त्तव्य है कि हमारी जो सबसे बड़ी सम्पत्ति है उसको संभाला जाए। राष्ट्र में काफी सम्पत्ति हैं। लेकिन राष्ट्र में सबसे बड़ी सम्पत्ति मानव संसाधन है। इसकी अगर आप चिंता करोगे, इसका अगर आप विकास करोगे, आप इसको कुशल बनाओगे, आप इसका जब स्किल डिवल्पमैंट करोगे तो राष्ट्र बनेगा।

आप जरा देखिए जब मैं मंच पर बैठा देख रहा था तो आपके बगल में एक तरफ लिखा हुआ था कि come to learn. किसके लिए आओ? सीखने के लिए आओ। अच्छा बनने के लिए, संस्कार प्राप्त करने के लिए, कुशलता प्राप्त करने के लिए आओ। जब आप अच्छे बन जाओगे, उसके बाद क्या करो? तो दूसरी तरफ लिख हुआ है Go to Serve, सेवा करने के लिए जाइये। राष्ट्र को उंचा करने के लिए जाइये, विकास करने के लिए जाइये। आज कितना अच्छा सैल्युट दिया मुझे बच्चों ने, कितना

सुंदर गीत गाया। और इसी के साथ–साथ लोकार्पण करने के पहले जो गुब्बारे यहां उड़ाये, जो आकाश में गुब्बारे जा रहे थे, उसका एक ही संकेत था Government Model High School में पढने वाले बच्चे अपनी कुशलता से, अपनी क्षमता से, अपने संस्कार और पढाई से, जिस तरह से गुब्बारे हवा में जा रहे थे, उंचाई ले रहे थे, उसी तरह आप भी उंचाई लें और राष्ट्र को उंचा बनाएं।

इसी शुभकामना के साथ मैं आप सबको बधाई भी देता हूं, आर्शीवाद भी देता हूं। अभी तो यहां पर एक हजार बच्चे हैं। स्कूल 10वीं तक ही है। आगे 12वीं तक भी होने वाला है बच्चों का यह विद्यालय जिसमें बहुत सारी सुविधाएं है।

मुझे खुशी है कि चण्डीगढ प्रशासन शिक्षा के क्षेत्र में भी चण्डीगढ का बहुत ध्यान रख रहा है। चण्डीगढ अगर ब्युटीफुल सिटी है, चण्डीगढ अगर स्मार्ट सिटी होने वाला है तो हमको स्मार्ट मैन भी चाहिएं, स्मार्ट लोग भी चाहिएं। और स्मार्ट लोग बनाने का अगर कोई कारखाना है, कोइ अगर फैक्ट्री है तो यह विद्यालय है। ऐसे इस विद्यालय का, इस कालोनी को, आप सबको लोकार्पित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। आप सबको पुनः बधाई। अभिवादन। धन्यवाद।